पाषाण काल PDF Download

Stone Age प्राचीन भारत (पाषाण युग)

आज हम प्राचीन भारत के Stone Age (पाषाण युग) बारे में जानने वाले है।

युगो का निर्धारण

1)पुरा पाषाण युग

- इसे प्राचीनतम पत्थर का युग (stone age) भी कहते है जिसमे सभ्यता की लंबी अवधी समाहित है इस युग मे वर्तमान जाती के प्रथम पूर्वजोने भारत उपमहादीप मे रहना शुरू किया इसका तात्पर्य है की यहा अवधी तीन लाख वर्ष पूर्वसे 8000 इसवीसन पूर्वतक की है ,

पुरा पाषाण युग को तीन अवस्थाओ मे बाटा जाता है

1) निम्नपुरापाषाण युग (stone age)

2) मध्य पाषाण युग

3) उत्तरी पाषाण युग

यह विभाजन ऊस समय के मानव द्वारा प्रयोग किये जाने वाले पत्थर के अवजारों के स्वरूप पर आधारित है

2) मध्ये पाषाण युग

पुरा पाषाण युग के पश्चात मध्य पाषाण युग आया है जिसे उत्तर प्रस्तर का युग भी कहते है जो लगबग आठ हजार इसवी सन पूर्व से चार हजार इसवी सन पूर्व तक का काल है यह पुरापाषाण तथा नव पाषाण युग के बीच का संक्रमण काल है इस युग मे पत्थर के बहुत छोटे छोटे अवजार (मायक्रो लीथ)होते थे

3) नव पाषाण युग

तिसरा युग नवा पाषाण युग या नवीन प्रस्तर का युग है जो 4000 से अठरासो इसवी सन पूर्व के समय को समहित करता है और इसकी पहचान पॉलिश दार पत्थर ओके औजारो से होती है

4) ताम्र पाषाण युग

इसे कॅल्कोलिथीक युग या ताम्रपाषाण युग कहते है जो 1800 इसवीसन पूर्व से 800 इसवी सन पूर्व तक का समय है इस युग मे पत्थर के अलावा तांबे(सबसे पहली बार भारत मे)का प्रयोग किया गया

पुरापाषाण युग

पुरापाषाण युग (पैलियोलिथिक युग,) जिसे पुराने पत्थर का युग भी कहा जाता है, एक प्रागैतिहासिक कालक्रम है जो लगभग 2.6 मिलियन वर्ष पहले से लेकर लगभग 10,000 वर्ष पहले तक था। इसकी विशेषता है प्राचीन मानव जनसंख्याओं द्वारा पत्थर के उपकरणों का व्यापक उपयोग किया जाना। पैलियोलिथिक युग को तीन प्रमुख चरणों में विभाजित किया जाता है:

1. निम्न पैलियोलिथिक (प्रारंभिक पत्थर का युग): यह अवधि लगभग 2.6 मिलियन वर्ष पहले शुरू हुई और लगभग 300,000 वर्ष पहले तक थी। इस समय के दौरान, प्रारंभिक मानव, जैसे कि होमो हैबिलिस और होमो एरेक्टस, ने सरल पत्थर के उपकरणों का उपयोग किया, मुख्यत: काटने, खरोंचने और पीसने जैसे कार्यों के लिए। वे खगोलीय शिकारी-इकट्ठाधारी थे जो खाने के लिए जानवरों की शिकार करते थे और पौधों को इकट्ठा करते थे।

2. मध्य पैलियोलिथिक: यह दौर लगभग 300,000 वर्ष पहले शुरू हुआ और लगभग 30,000 वर्ष पहले तक था। इस दौरान, नोटेबल विकास में नींदरथाल मानवों (होमो नींदरथालेंसिस) का उदय हुआ, जिन्होंने अधिक विशिष्ट पत्थर के उपकरण बनाए और ऐसे व्यवहार दिखाए जिनसे एक अधिक सांस्कृतिक जटिलता का संकेत होता है। प्रतीकत्मक विचार, दफन प्रथाएँ, और यहाँ वहाँ की आरंभिक कला के प्रारूप इस समय में प्रकट होते हैं।

3. उच्च पैलियोलिथिक: यह युग लगभग 40,000 वर्ष पहले शुरू हुआ और लगभग 10,000 वर्ष पहले तक रहा। उच्च पैलियोलिथिक की प्रमुख विशेषता मानव नवाचार और सांस्कृतिक उन्नति में एक महत्वपूर्ण वृद्धि है। इस समय में आधुनिक होमो सापियंस उत्पन्न हुआ और उन्होंने जटिल उपकरण, जैसे कि ब्लेड और प्रक्षेपणासूत्र, बनाए। उन्होंने तीर-तलवार का उपयोग करने जैसे उन्नत शिकार प्रतिक्रियाएँ भी विकसित की।

4.इस युग की प्रमुखता स्पष्ट रूप से प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के बढ़ने के साथ है, जैसे कि गुफा चित्र, मूर्तिकला, और व्यक्तिगत आभूषण, जो एक उच्च स्तर की अवबोधना और कलात्मक सृजनात्मकता की संकेत करते हैं।
पैलियोलिथिक युग का अंत विशेषत: होलोसीन युग के आगमन और पौधों और जानवरों के पालन-पोषण के विकास के साथ जुड़ा है। इसने कृषि और पौधों और जानवरों की पालन-पोषण की विकसन की शुरुआत की, जिससे कृषि-आधारित समाजों के उदय और खगोलीय शिकारी-इकट्ठाधारी शैली से अधिक स्थायी बसे की ओर एक स्थायी बसे की ओर परिवर्तित हो गया।

पुरापाषाण युग

क्षेत्र जहा ये स्थान पाए गए

1) निम्न पाषाण युग - सोन घाटी (पाकिस्तानी पंजाब), बेलन घाटी (जिला ,मिर्ज़ापुर ,उत्तरप्रदेश)
2) मध्य पाषाण युग - सोन घाटी ,बेलन घाटी ,नर्मदा घाटी ,और तुंगभद्रा घाटी
3) ऊपरी पाषाण युग - बेलन घाटी छोटासागर पठार , मध्य भारत ,नागपुर गुजरात ,कर्नाटक , और आँध्रप्रदेश

मध्यपाषाण युग Stone Age

(मेसोलिथिक युग,) जिसे मध्य पत्थर युग भी कहा जाता है, प्रागैतिहासिक कालक्रम में पुरानी पत्थर युग (पेलियोलिथिक) और नई पत्थर युग (नियोलिथिक) के बीच की एक अवधि है।

यहाँ कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं जो मेसोलिथिक युग की हैं:

- समय अवधि: मेसोलिथिक युग विभिन्न जगहोंपर या क्षेत्र में अलग-अलग हो सकता है, लेकिन आमतौर पर यह लगभग 10,000 ईसा पूर्व से 5,000 ईसा पूर्व तक का समय स्पैन करता है। यह समयअंतर विभिन्न क्षेत्र और पुरातत्विक साक्ष्य की उपलब्धता के आधार पर भिन्न हो सकता है
- मेसोलिथिक में शिकार और इकट्ठा करने के प्रथाएँ में कुछ परिवर्तन हुआ। लोग जल, शंखमिश्रित भोजन और छोटे खेल जानवरों जैसी विभिन्न खाद्य स्रोतों पर अधिक आश्रित होने लगे। यह संभावना है कि इससे लोगों का अधिक स्थायी जीवनशैली की ओर बढ़ने की दिशा में एक परिवर्तन हुआ।